ચંદરાજા અને ગુણાવલી રાણીના કાગલ.

તથા

પંડિત વીરવિજયજી કૃત શ્રીગોડી પાર્શ્વનાથના ઢાલીયાં.

આ પુસ્તક

શ્રાવક ભાઈઓને ભણવા વાંચવાને અર્થે

શ્રીભુંજાપુરી મધ્યે

જગદીશ્વર છાપખાનામાં

છપાવી પ્રસિદ્ધ કર્યું.

સંવત્ ૧૯૨૦ ના માહા શુદિ ૧૫ ચંદ્રવાર.

॥ अथ श्रीचंदराजायें लखेलुं ॥

॥ गुणावलीराणी प्रत्यें पत्र ॥



॥ भलु चित्त धरिने, अवधारो मुज वा
त ॥ ए देशी ॥ ॥ स्वस्ति श्री मरुदेवी
ना जी, पुत्रने करुं रे प्रणाम ॥ जेहथी मनवं
छित फल्यां जी, उपगारी गुणधाम ॥ गुण
वंती राणी वांचजो लेख उदार ॥ १ ॥ स्वस्ति
श्री आभापुरें जी, सर्वे उपमा धीर ॥ पटरा
णीय गुणावली जी, सज्जन गुणें गंभीर ॥
गु० ॥ २ ॥ श्री विमलापुर नयरथी जी, लखि-
तं चंद नरिंद ॥ हित आशिरवाद वांचजो जी,
मनमां धरीय आनंद ॥ गु० ॥ ३ ॥ आहीं कुशल
जेम छे जी, नाभीनंदन सुपसाय ॥ जगमां ज

स कीरति घणी जी, सुर नर सेवे छे पाया॥-
गु०॥२॥ तुमथी जेम कुशल तणाजी, कागल
लखजो सधाय॥ मलवुं ने परदेशमांजी, ते
तो कागलथी रे थाय॥ गु०॥४॥ समाचार
सहु ओछजो जी, मोहन गुण मणिमाल॥
इहां तो सूरजकुंडथी जी, प्रगटी छे मंगल मा
ल॥ गुण०॥५॥ इति॥

॥ अथ सिद्धगिरिस्तुति ॥

॥ छप्पय॥ श्री पुंडर गत नमी, विनमि
विद्याधर॥ द्रविड वारिखिल भूप, महीपालक
नृप जेयर॥ थावच्चा सूरिराज, सूरि सेल-
ग सुदर्शन॥ नारद पंडव पंथ, वसु देवकी जद
सुत वंदन॥ अनंत कोटि शिव पद लये, ती
र्थ इह तारन तरन॥ कविराज दीप वंदन करे,
सिद्धगिरि असरन सरन॥१॥

॥तेहनी हर्ष वधार्थनो जी, राणीए मनमां ने सेज ॥ मने मनमां कांहीं प्रेम होय तो, हर्ष ने कागल देज ॥ गु० ॥७॥ तुम सज्जन गुण-सांभरे जी, दिन दिनमां सो वार ॥ पण ते दिन नवि वीसरे जी, कुंअरनी कांज जे थार ॥ गु० ॥८॥ माणी नहीं मुज प्रीतडी जी, थई तूं सासूने आधीन ॥ ते वातुं संभारतां जी, मन पाम्युं छे रे दीन ॥ गु० ॥९॥ पण शुं तूं करे कामिनी जी, शुं कहियें तुजने नारी स्त्री होवे नहिं कोईनी जी, एम बोले छे संसार ॥ गु० ॥१०॥ सूता वेचे कंतने जी, हणे वाघ ने चोर ॥ जिये जिसाडीनी आंजथी जी, एहवी नारी निठोर ॥ गु० ॥११॥ चाले वांकी दृष्टिथी जी, मनमांहि नव नवा संच ॥ ए लक्षण व्यभिचारीनां जी, पंडित बोले प्रपंच

॥गु०॥१२॥ ओक समजावे नयणथी जी, ओक समजावे रे हाथ॥ अ चरित्र नारीतणांजी, जाणे छे श्री जगनाथ॥गु०॥१३॥ आकाशें तारा गणेंजी, तोले सायर नीर॥ पण स्त्री चरित्र ना कहि शकेजी, सुरगुरु सरजो रे धी र॥गु०॥१४॥ कपटी निस्नेही कही जी, वली नारी सर्व॥ ईन्द्र चन्द्रने भोलव्या जी, आ पण करीयें श्यो गर्व॥गु०॥१५॥ नदी नी र जुनजलें तरे जी, केहवाय छे जनाथ॥ अेक विषयने कारणें जी, हणे कंतने निज हाथ॥गु०॥१६॥ गामभमां जीये श्वानथी जी, वनमां आसे छे वाघ॥ नासे घरकु देखिने-जी, पकडे फणिधर नाग॥गु०॥१७॥ भर्तृह रि राजा वली जी, विक्रम राय महाभाग॥ ते सरखा नारी तणा जी, कांइ न पाम्या

ताग ॥ गु० ॥१८॥ तो राणी तुज शुं कहूं जी,
ए छे संसारनी रीत ॥ पण हुं एम नवि
जाणतो जी, तुजने एहवी अविनीत ॥ गु० ॥
॥१९॥ तुजने न घटे कामिनी जी, करवो अं
तर एम ॥ माहरी प्रीत जरी हती जी, तूं
पसटाणी केम ॥ गु० ॥२०॥ मुजथी छानी
गोठडी जी, सासूथी करी नेह ॥ जिम वाव्यां
तिम ते लण्यां जी, फल पामी तूं एह ॥ ने
वातो संभारतां जी, मन पामे छे छेह ॥ गु०
॥२१॥ हूं वालो नहिं ताहरे जी, वाली सा
सू छे एक ॥ तो वहूने सासू भली जी, मो
कले माहकल्यो छेक ॥ गु० ॥२२॥ दोष कि-
स्यो तुज दीजिये जी, जोतां हियडे विमा-
स ॥ लावी लाव भरे नहीं जी, लजिया ने
कर्म तमास ॥ गु० ॥२३॥ तुज अवगुण सं

लारतां जी, मनमां आवे छे रोष ॥ प्रीति द
शा संभारतां जी, जहु उपजे छे संतोष ॥ गु०
॥ २४ ॥ अगल थोडो ने हित घणुं जी, मोसे
सिजियुं न जाय ॥ सागरमां पाणी घणुं
जी, गागरमां न समाय ॥ गु० ॥ २५ ॥ अथ
समस्या ॥ गहूंनी पहेला नीपजे जी, पी
लुं नरेश्वर तास ॥ पहेले चोथी मातरा जी,
ते छे तुमारी पास ॥ गु० ॥ २६ ॥ जवा ॥ हेनारी जा
ति शामली जी, पाणी मांहे वसंत ॥ ते तु
म सज्जन हेजवा जी, अलजे जातिये घ
रंत ॥ गु० ॥ २७ ॥ आंजनी डीडी ॥ मठ मांहे ता
पस वसे जी, विय हीने जडार ॥ तुम अम
जेवी प्रीतडी जी, जाणे छे किरतार ॥ गु० ॥
॥ २८ ॥ मजीठ ॥ सात पांचने तेरमां जी, मे
णवजे होई चार ॥ तेनी पासें तमें वश्यां जी,

सनेह नहीं लगार ॥ गु० ॥ २९ ॥ जे थारे स
मस्या तणो जी, करजे अर्थ विचार ॥ प्री
ति दशा जिम ऊल्लसे जी, प्रगटे हर्ष अ-
पार ॥ गु० ॥ ३० ॥ कागद वांची जेहनो जी,
लाजने तुरत ज जाय ॥ सासूने न नणा
वशो जी, जे होशे कपण आप ॥ गु० ॥
॥ ३१ ॥ वली हलकारा मुजथकी जी, सकु
सुणजे अवदात ॥ कागलथी अधिकी घ
णी जी, कहेशे मुजथी वात ॥ गु० ॥ ३२ ॥ इ
णि परे चंद नरेसरे जी, लखिओ लेख श्री
कार ॥ दीप विजय कहे सांभलो जी, कागल
वात रसाल ॥ गु० ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री चंदराजा लिखित लेख
कागल समाप्त ॥

॥ अथ गुणावली राणीयें पाछो ॥
॥ उत्तरनो लखेलो कागल ॥

॥ दोहा ॥ श्रीवरदा जगदंबिका, शा
रदमात दयाल ॥ सुर नर जस सेवा करे,
वाणी जास रसाल ॥ १ ॥ त्रिभुवनमें कीर
ति सदा, वाहन हंस सुहाय ॥ जड बुद्धि -
पल्लव किया, जकु पंडित कविराय ॥ २ ॥ पु
स्तक वीणा कर धरे, श्री अंबरी जास ॥
कासमीर लईरजग्रमें, तेनो ठाम निवास
॥ ३ ॥ ए जगदंबा पद नमी, वरणवुं जी
न लेख ॥ श्रोताने सुणतां थकां, प्रगटे ह -
र्ष विशेष ॥ ४ ॥ चंद लेख वांची करी, गु
णावली निज नार ॥ उत्तर पाछो कंतने,
लेख लखे श्रीकार ॥ ५ ॥
॥ धवल शेठ लई लेटणुं ॥ ए देशी ॥

स्वस्तिश्री विमला पुरें, वीरसेन कुल थं
द रे ॥ राज राजेश्वर राजिया, साहिज थं
द नरिंद रे ॥ वांचिज्ये लेज मुज वालहा ॥
॥१॥ श्री आलापुरी नयरथी, कुकमी दा
सी सकाम रे ॥ लाजित राणी गुणावली,
वांचिज्ये मारी सलाम रे ॥ वां० ॥२॥ साहि
ज पुण्य पसायथी, ईहां छे कुशल क-
ल्याण रे ॥ वालाना क्षेम कुशल तणा, का
गल लजज्ये सुजाण रे ॥ वां० ॥३॥ सम
स्या थारेक मोकलजे, क्षत्रीवंश वजीर
रे ॥ मुज दासीनी ऊपरें, कृपा करी वड-
वीर रे ॥ वां० ॥४॥ वाहलाएं लेज ने मो
कल्यो, सेवक गिरधर साथें रे ॥ जेमें कुशा
लें आवियो, पहोतो छे हाथो हाथे रे ॥ वां०
॥५॥ वाहलानो कागल देजिने, हसिया कुः

जना वृंद रे ॥ पीउने मलिआ जेटलो, उप
नो छे आनंद रे ॥ वां॰ ॥६॥ सूरजकुंडनी महे
रथी, सफल थयो अवतार रे ॥ ते सहु कुश
ल कल्याणना, आव्या छे समाचार रे ॥ वां॰
॥७॥ सोल वरषना वियोगनुं, भागयुं दुः-
ख अपार रे ॥ कागल वांचतां वांचतां, चा
ली छे आंसुनी धार रे ॥ वां॰ ॥८॥ जे वाला
अे लेखमां, लखिया ओलंभा जेह रे ॥ मु
झ अवगुण जोतां थकां, थोडा लखिया छे
अेह रे ॥ वां॰ ॥९॥ साहिब लखवा जोग
छो, हुं सांभलवा जोग रे ॥ जेहवा देव तेह
वी पातरी, साची कहेवत लोग रे ॥ वां॰ ॥१
॥ समस्या चार लखी तुमे, ते समजुं छुं
स्वामी रे ॥ मनमां अर्थ विचारतां, हरखे छे
आतमराम रे ॥ वां॰ ॥११॥ हुं तो अवगुणनी

भरी, अवगुण गाडां लाज रे ॥ जिम कोई
वायु वेगथी, बिगडी आंबा साख रे ॥ वां०
॥१२॥ मुज अवगुण जोतां थकां, नावे त-
मने महेर रे ॥ पण गिरुआ गंभीर छो, जे
हवी सायर लहेर रे ॥ वां० ॥१३॥ गिरुआ
सहेजे गुण करे, कंत म कारण जाण रे ॥ ज
ल सींची सरोवर भरे, मेघ न मागे दाण
रे ॥ वां० ॥१४॥ पथ्थर मारे तेहने, फल आ-
पे छे अंब रे ॥ तिम तुम सरखा साहिबा,
गिरुआ गुणनी लुंब रे ॥ वां० ॥१५॥ कापे
चंदन तेहने, आपे छे सुगंध अपार रे ॥ मु
ज अवगुण जाणया हिये, धन्य धन्य तुम -
अवतार रे ॥ वां० ॥१६॥ मुज सरखी कोई
पापिणी, दिसे नहीं संसार रे ॥ मान्युं सा
चूं कह्युं, छेतरियो भरतार रे ॥ वां० ॥१७॥

में जाण्युं नहिं एहवुं, हुं तो भोली नार रे ॥ सासूने कने थकी, समझी नहीं लगार रे ॥ वां० ॥ १८ ॥ में आगलथी लही नहीं, सासू एहवी नाथ रे ॥ जावी गाडली जी थकी, जवु घेहेलानी साथ रे ॥ वां० ॥ १९ ॥ कांईक कर्या पुण्यथी, सद्बुद्धि पण प्रगटाय रे ॥ निभ राणीने जोवनुं, जाधा नुं मन थाय रे ॥ वां० ॥ २० ॥ करी प्रपंच ठग सासुए, घणो हेजाळ्यो राग रे ॥ पछे तो वात वधी गई, थयो पीछनो डाग रे ॥ वां० ॥ २१ ॥ किहां आला किहां विमला पुरी, जेथी नेह तमास रे ॥ हांसीथी जांसी थई, करवा पडिआ विमास रे ॥ वां० ॥ २२ ॥ परण्यानी स हु वातडी, मुजने करी प्रलात रे ॥ जे ते ठेका णे हाटती, तो एवडुं नवि थात रे ॥ वां० ॥

॥२३॥ मिंढलनी सहु वातडी, में कही सासूने
कान रे॥ पछें तो आव्युं न रह्युं, प्रगट्यूं ची-
न्हुं तान रे॥ वां०॥२४॥ माहरे कह्युं मुजने
नड्युं, जाउं न आव्युं कोहि रे॥ पीयरनी मात
कोठीमां, मुज घालि नेम रोय रे॥ वां०॥२५॥
॥पस्तावो थयो करवो हवे, कह्युं कांहि न ज-
य रे॥ पाणी पी घर पूछतां, लोकमां हांसी
थाय रे॥ वां०॥२६॥ जे कांई लावी लावमां
ने विधि लाजिया वेज रे॥ ते सवि लोगव
वा पडे, तिहां नहीं मीन ने मेष रे॥ वां०॥२७॥
॥सासूना भया विना, सोल वरस गयां ने
ह रे॥ मुज मनडानी वातडी, जाणे केवली
तेह रे॥ वां०॥२८॥ पण कुकुटथी ने नर थया,
ते विस्तरशे वात रे॥ सासू सांभलशो कदा,
वली करशे उतपात रे॥ वां०॥२९॥ ते माटे

सावधानथी, रहेजे धरिय उल्लास रे ॥ जे
हवा तेहवा लोकमां, करशो नहिं विशवास रे
॥ वां० ॥ ३० ॥ सासूने कहेवरावजे, इहां आ
व्यानो लाव रे ॥ पछे जेहवा पासा पडे, तेह
वा देजे दाव रे ॥ वां० ॥ ३१ ॥ मुज अवगुणनी
गांठडी, नाखजे खारे नीर रे ॥ निज दासी क
री जाणजे, मुज नणदीना वीर रे ॥ वां० ॥ ३२
॥ कागल लखजे फरि फरि, कृपा करी एक म
न रे ॥ वेहेलां दरिसण आपजे, शरीरनां क
रजे जतन रे ॥ वां० ॥ ३३ ॥ मुज जोहनी वा
हवी घणुं, प्रेमलालच्छी नेह रे ॥ तेहने जा
कु हेतें करी, जोसावजे घरी नेह रे ॥ वां० ॥ ३४ ॥
॥ समस्या ॥ राधापतिक कर वसे, पंपिन
अक्षर लेजे रे ॥ प्रथम अक्षर दूरें करी, व
धे ते मुजने देजे रे ॥ वां० ॥ ३५ ॥ उत्तर ॥ दर्शन

ने हवे सूरज कुंडथी, विघन थयां विसराल रे॥ तो सहु पुण्य पसायथी, फलशे मंगल माल रे॥ वां०॥७६॥ ईम वर्णी नीज गुणाव ली, प्रेष्यां प्रीतम पास रे॥ दीपविजय कहे चंदनी, हवे सहु फलशे आश रे॥ वां०॥७७॥ ॥इति गुणावलीनो कागल संपूर्ण॥

॥अथ श्री गोडी पार्श्वनाथजीना ढाली यां अथवा मेघाकाजलना ढालीयां प्रारंभः॥

॥दोहा॥ सान्निध्यकारी भारती, पद्मास न सुखदाय॥ समरंतां कुमता हरे, तेम सुख संपत्ति थाय॥१॥ मया करी माता हवे, द्यो मुज वयण विलास॥ गुण गाउं जिनरा-जना, श्री गोडी सुखवास॥२॥ अव्यय पद

तेहने दीये, जे करे एहनो संग ॥ महेमदावा

दी पासजी, नारंगो नवरंग ॥ ७ ॥ प्रतिमा अ-

णे पासनी, प्रगटी पाटण मांहे ॥ जिन प्रति-

मा जिनवर जिसी, वंदो लवि उत्साहें ॥ ८ ॥

उत्पत्ति प्रतिमा तणी, कहुं नमि गुरु सुविवे

क ॥ महोटाना गुण गावतां, जगमां वाधे टेक

॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल पहेली ॥ गोकुल मथुरां रे वाला

॥ ए देशी ॥

॥ जंबूद्वीपें रे लरतें, काशी देश मनो

हर वरते ॥ नयरी वणारसी रे राजे, अश्वसे

न नरपति तिहां गाजे ॥ जंबू० ॥ १ ॥ वामा

राणी रे मोहे, चउद स्वप्न सूचित ते सोहे ॥

पास कुअरजी रे जाया, अनुक्रमें यौवन वय

प्रलु पाया ॥ जंबू० ॥ २ ॥ प्रलावती कन्या रे प

रणी, सुज विलसे जिन साथें घरणी ॥ त्रीश

वरस मंदिर सुज वरता. दीक्षा लई जिन त

प जकु करता ॥ जं जू० ॥ ३ ॥ घाती कर्मने रे

नासे, केवल लेह जिनजी उल्लासें ॥ देशा-

ना देई केई जीव वाली. आयु एक शत व

र्षनुं पाली ॥ जं जू० ॥ ४ ॥ चार अघाती कर्म

ने टाली. वरिया शिववधू जिन लटकाली

॥ आठ करमने नाशें सोहे, आठ गुणें जिन

जी वली मोहे ॥ जं जू० ॥ ५ ॥ जन्म जराने म

रण न आवे, सुज अनंतुं क्षायिक भावें

॥ क्रोध ने जाली कर्मने गाली, एहने न

मतां नित्य दीवाली ॥ जं जू० ॥ ६ ॥

॥ ढाल जीजी ॥ तने गोकुल जोलावे

कान, गोविंद गोरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ पासनी प्रतिमा त्रण्य, मोहन गारी रे

॥भरावे श्रावक जाण, प्रभु सुज कारीरे॥
॥१॥हेमाचार्य गुरु राय, वारें भरावे रे॥अं
जन शिलाका थाय, मुहूर्त शुभ आवे रे॥
॥२॥प्रतिमा पाटण मांहे, सुघरे शोहेरे॥
पधरावी स्थानक त्यांही, श्रावक मोहे रे॥३
॥भूमि जाणीने अेक, तुरक ते लाव्योरे॥
प्रभु गोडीपासनी अेक, लेई घर आव्यो
रे॥४॥घरमां जोही जाक, मांहे घाली रे
॥नित्य सूवे ऊपर ते मद, शय्या वाली रे
॥५॥अेक दिन सुहणा मांहे, यक्ष ते जो-
लेरे॥हवे तेणे सभे ते तुरक, हईडुं जोले
रे॥६॥नहींतर मारीश मद, मरडीश तुज
नेरे॥ते मारे घरथी काढ, हवे तुं मुजने रे
॥७॥पार कर देश विशेष, तिहांथी आवशे
रे॥शेठ मेघा शा शत पांच, टक्का लावशेरे

॥८॥ पांचसें टका तेह, तुजने देसो रे॥ आप ने कही एह, मेघो लेशे रे ॥७॥ मत करने तुं वात, केहनी पासें रे॥ आनथी कोडी कल्याण, ताहरे थाशे रे ॥१०॥ सुख संपत्ति वली भोग, एहने नामें रे॥ एम कहीनें ते यक्ष, गयो नि ज ठामें रे ॥११॥ जीहीनो ते मन मांहे, आ कुलो थाय रे॥ कुल वीर कहे सुण संत, - आगल जे थाय रे ॥१२॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ परोणलीनी देशी ॥

॥ पार कर देश विशेष, मनोहर शोहे रे॥ सुर मांहे जिम ईद, अधिक रूप मोहे रे॥ सुणजो रंगें लाल, लविजना॥ रंग अलंगे लाल, लविजना॥ मन सुविलासें लाल, ल विजना॥ अधिक आणंदें लाल, लविजना॥ ए आंकणी॥ तारामां जिम चंन्द्रजती भ

नोहार ज्ने, नरमांहे जेम चक्री तेन उदार ज्ने
॥सु०॥१॥ कानन मां जेम नंदन गुण गंभीर
ज्ने, गिरिवरमां जेम मेरु महोटो धीर ज्ने॥
सु०॥ इंधनमां जेम चंदन सभरें सार ज्ने,
वाजित्रमां जेम भंला शब्द उदार ज्ने॥सु०
॥२॥ धातुमां सुवर्ण पुराणे गीता ज्ने, कुंजर
मां ऐरावण शीयलें सीता ज्ने॥सु०॥ ति
म जंबूमां सहस्स बत्रीशे देश ज्ने, तेहमां
सोहे पार कर देश विशेष ज्ने॥सु०॥३॥ ति
हां भूदेसर नामें नयर विसाल ज्ने, जेमां न
ही कांई कोईनो वयरी वाल ज्ने॥सु०॥ शो
भे जेमां श्रेष्ठ आवास प्रधान ज्ने, संख्या ते
हनी चौदशें बावन्न ज्ने॥सु०॥४॥ भूपति
राज्य करे तिहां राय खेंगार ज्ने, तेतो शोहे
जाति तणो परमार ज्ने॥सु०॥ नयरी मांहे

वणज करे व्यापारी जो, अपछरा सरखी शोहे तस घर नारी जो ॥सु०॥५॥ तिहां का लशा महोटो छे व्यवहारी जो, सहु संघ मांहे अधिको ते अधिकारी जो ॥सु०॥६॥ लशानो मेघो थाय जमेवी जो, वात करे छे अेक दिन सालो जमेवी जो ॥सु०॥ ॥७॥गुर्जरदेशें इहांथी जईने आवो जो, पैसा जरथी केई केई वस्तु लावो जो ॥सु० ॥८॥नल कहे मेघा भणी सुण संत जो, वीर कहे सुणो आगल कहुं विरतंत जो॥सु०॥९॥

॥ढाल चोथी॥ जिनजी छहु आशा ढनी जो ॥अे देशी॥

॥ वल तुं ते मेघो अेम कहे जो, हवे-चालीश हुं परभातें जो॥ शकुन भलां होशे यदा जो, चालुं साथ करी गुजरातें जो॥१॥

लोक सहु जय जय वदे जो ॥ ए आंकणी ॥
बहु परिवारें परवर्यो जो, वली धन घणुं
लेई साथ जो ॥ कंकु तिलक शिरमां कीयो
जो, रुडुं श्रीफल लीधुं हाथ जो ॥ लो०॥२॥-
ऊंट उतार लेई करी जो, हवे आव्या चउटा
मोझार जो ॥ तव सन्मुख कन्या मली जो, ते
तो करती रंग रसाल जो ॥ लो०॥३॥ मालण
फूलडें वधावती जो, वली मत्स्य युगल म-
ल्युं जास जो ॥ भाजन दधि भरियुं मल्युं -
जो, कवि वेद बोलंतो व्यास जो ॥ लो०॥४॥
रासल डाबो बोलतो जो, हनुमंतें दीधी हा
क जो ॥ जन कहे काम होशे सही जो, वली म
धुरा बोले काउ जो ॥ लो०॥५॥ अनुक्रमें चा
ल्या मारगें जो, आव्या पाटण नगर मझार
जो ॥ उतारा शेठें कीया जो, मनमांहे हरख-

अपार जो ॥लो०॥६॥ निशा शयन निद्रा
भरें जो, यक्ष आवी जोले ताम जो ॥ शेठ ते
सघलुं सद्दहे जो, ईहां तुरक तणुं छे धाम
जो ॥लो०॥७॥ तेहने घेर नई आपने जो,
रूडा पांचशें दोकडा सार जो ॥ लेने तुं प्र-
तिमा पासनी जो, थाशे कोडी कल्याण मनो-
हार जो ॥लो०॥८॥ अेम कही यक्ष तुरक भ
णी जो, कहे देने प्रतिमा सार जो ॥ वीर कहे
भवि सांभलो जो, ईहां वात सूणे निरधार
जो ॥लो०॥९॥

॥ ढाल पांचमी ॥ माता यशोदा नमा
रो कान, मही वेचंतां दाण मागे ॥ अे देशी ॥

॥ हवे अेम करतां परभात जो, वातक
रे अेकांत जो ॥ तिहां शेठजी पांचशें दाम
जो, प्रतिमा लाव्या ठाम जो ॥१॥ प्रतिमा पू

जी अेक चित्त जो, लावें जसथी वित्त जो ॥जेम
व्यापारी मन दाम जो, सीताने मन राम जो
॥२॥ वडवजतें मूर्त्ति आवी जो, आपशे वि
त्त कमावी जो ॥ धन जसथी रे तिहां ली-
धुं जो, धार्युं कारज कीधुं जो ॥३॥ ऊंट वी
शने रेना भरिया जो, मांहे जेहा गुण हरि
या जो ॥ ते पाटणथी हवे चालिया जो, साज
न सहु तिहां मलिया जो ॥४॥ अनुक्रमे
चाल्या जावे जो, राधनपुरमां आवे जो ॥
तिहां दाणी दाणज लेवा जो, अेकठा थई
ने आव्या जो ॥५॥ गणतां ऊंटने भूले ले
जे जो, अधिको ओछो देजे जो ॥ आश्चर्य
हुओ अेणें ठामें जो, दाणी विस्मय पा-
मे जो ॥६॥ ते मेघाशाने पूछे जो, कहो अे
कारण शुं छे जो ॥ मेघो कहे सुण दाणी जो,

चिंतामणि सम जाणी जे ॥७॥पाटणथी प्रतिमा लावी जे, ते ओरुमां पधरावी जे ॥कहो किम जसवीर्ये घणी जे, जिन प्रतिमा गुण वखाणी जे ॥८॥ प्रभु पास तणे सुपसाय जे, घण भेली घर जय जे ॥ तिहां जात्रा करे मन लावे जे, लाभ घणेरा पावे जे ॥९॥ ते राधणपुरथी चलिया जे, पार कर मांहे भलिया जे ॥ जूहेसर नगरें आवे जे, वधामणी देवरावे जे ॥१०॥ वधामणी जब आवी जे, शेठ तणे मन लावी जे ॥ तिहां आव्या जीनभालें जे, ते कहीयें आगल ढालें जे ॥११॥

॥ढाल छठ्ठी॥रसीआना गीतनी देशी

॥रसीया जिनवर दरशन करवा, का जलशा तिहांरे लोल॥रसीया संघ सहि

त ते आवे, जिनप्रतिमा जिहांरे लोल ॥ र
सीया ढोल नगारां वाजते, गाजते आवी
यांरे लोल ॥ रसीया हर्ष घणो मनमांहे,
जिनवर लाविया रे लोल ॥५॥ रसीया -
आव्या ओच्छव महोच्छव, करता ते घणा
रे लोल ॥ रसीया वंदे पदकज लावशुं,
श्री जिनवर तणां रे लोल ॥ रसीया संवत
ते गुणस्थानक, आंक जाणजो रे लोल ॥ र
सीया अठीशे शुदि कार्त्तिक, मास वखाण
जोरे लोल ॥६॥ रसीया जीवने थावर -
वारे, जिनवर थापतां रे लोल ॥ रसीया या
चक जनने दान, अनर्गल आपतां रे लो
ल ॥ रसीया अेक दिन कानलशा कहे, ति
हां मेघा लणी रे लोल ॥ रसीया नाणुं अ
मारि लईने, गया गुजर लणी रे लोल ॥७॥

रसीया जिहां ते वावस्युं वित्त के, तस लेजुं
करोरे लोल ॥ रसीया मेघाशा कहे शेठ-
जी, ते हवे सांभलोरे लोल ॥ रसीया जिन
वर लीधा दीधा, पांचशें तेहने रे लोल ॥
रसीया कानजशा कहे काम, आवे ए केह-
नेरे लोल ॥४॥ रसीया मेघो कहे सुण का
नजी, ए शिर माहरेरे लोल ॥ रसीया जेह
मांहें वली लाग, न देवो ताहरे रे लोल ॥ र
सीया मेघाशानी भार्या, जेकन मोहती
रे लोल ॥ रसीया मरगादे अभिधाने, ष
टगुणें शोहतीरे लोल ॥५॥ रसीया दो
वसु छे तेहने, रवि शशी सारिजारे लोल
॥ रसीया महीयोने मेहरो नामें, दोय सु
त पारीजारे लोल ॥ रसीया ऋजु विन-
यादि गुणें करी, शोभित छे सदारे लोल॥

रसीया रूपचंत जकुशुध्धिके, वीर कहे मुग
रे लोल ॥८॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ ओंखी माधवजीनी
पींपली रे लोल ॥ अे देशी ॥

॥ अेम करतां जीतुंन तदा रे, वाद कु
आं विकराल वाला ॥ मेघाशा धनराज-
ने रे, जोवावे ततकाल वाला ॥ भविय
ण भावे सांभलो रे ॥ अे आंकणी ॥१॥ जि
नप्रतिमा पूजे तमो रे, भाव धरी निरधा
र वाला ॥ बार वरस धनराजजी रे, पूज्या
जिन जयकार वाला ॥ भ० ॥२॥ अेक दिन
यक्ष सुहणे कहे रे, सुण मेघा अेक वात वा
ला ॥ अम साथे तु आवजे रे, परिवारी प
रभात वाला ॥ भ० ॥३॥ वेहेल करी भावल
तणी रे, जेसाडी विम्घ दयाल वाला ॥ देवा

ણાંદરાયકા નાણા રે, હોય વૃષભ છે બાલ
વાલા ॥ લ૦ ॥૪॥ એકલો વેહેલ તું હાંકને
રે, સાથેં ન લેઈશ કોય વાલા ॥ ચાલ ને
બાંક થલ ભણી રે, પુંઠ વાલી નવી જોય-
વાલા ॥ લ૦ ॥૫॥ મેઘાશાને એમ કહી રે,
યક્ષ ગયો નિજ ઠામ વાલા ॥ રવિ ઉદ્યોત-
થયો યદા રે, કરવા માંડ્યું કામ વાલા ॥ લ૦
॥૬॥ વેહેલ તિહાં તે લાવીયો રે, વૃષભ આ
ણ્યા સાર વાલા ॥ વેહેલ હાંકીને ચાલિયો
રે, લોક મલ્યાં તેણી વાર વાલા ॥ લ૦ ॥૭॥
દુરિત સકલ દૂરેં ગયાં રે, રવિ તેજેં નભ જ
ય વાલા ॥ હર્ષ ઘણો શેઠને તિહાં રે, જિમ
કોઈ પરણવા જાય વાલા ॥ લ૦ ॥૮॥ માર
ગ ચાલતાં આવીયા રે, બાંક થલમાં તેહ
વાલા ॥ જિન પ્રતિમા પાસેં રહી રે, છાયા ન

छोडे देह वाला ॥ल०॥ ७॥ भूत प्रेत निहां छे घणा रे, इंज तणो नहीं पार वाला ॥व्यं तर केई चाला करे रे, शेठ करे विचार वाला ॥ल०॥ ८॥ अेणी अवसर कुं अेकलो रे, कोण करशो मुज सार वाला ॥ यक्ष तदा आवी कहे रे, मत कर फिकर लगार वाला ॥ ल०॥ ९॥ वेहेल हांकीने चालीयो रे, आव्युं ऊजड गोडी गाम वाला ॥ वीर कहे जन नि हां नहीं रे, नहीं मंदिरनुं ठाम वाला ॥ल०॥ १० ॥ इति ॥

॥ढाल आठमी ॥ वनमां वाजे रे वांसली ॥ अे देशी ॥ अेणी अवसर तिहां शेठजी, थिंते चित्त मझार ॥ शेठजी लावे रे सांभलो ॥ वेहेल तणी गति अचिरिज अछे, सन्मुख जोई लगार ॥ शेठ० ॥ १॥ वसुधा ऊपर रे-

चालती, थंलाणी तणें ठाम ॥शे०॥नविते णायें रे जलें करी, लींत कीयो चित्राम॥शे० ठ०॥२॥ चिंता चित्तें व्यापती, शेठ हूओ दिलगीर॥शे०॥रात्रि पडी सूता शेठजी, चिंता तुर शरीर॥शे०॥३॥ सुहणा मांहे रे शेठने, यक्ष कहे तेणी वार॥शे०॥ आ गोडीपुर गाम छे, जिननो करजे विहार॥शे०॥४॥दक्षिण दिशायें रे तुं जजे, तिहां छे नीलुं रे छाण॥शे०॥ कूओ ऊभटशे रे नीरनो, प्रगटशे पथ्थर जाण॥शे०॥५॥पासें उग्यो रे उजलो, आकडा हेठल सार॥शे०॥स्वस्तिक पूर्यो रे चोखा तणो, धन जहुलुं सुविशाल॥शे०॥६॥ शिरोही गामेरे एक छे, शिलावटमां मनोहार॥शे०॥ ते अति चतुर छे काममां, पण शरीरें रोग उदार॥शे०॥जान

भण करी छांटजे तेहनें, जशे रोग विकार॥ शें०॥पायो मंडावजे देहरा तणो, पामीश नग सुजसार॥शें०॥८॥एम कही यक्ष ते चालीयो, निज थानक मोझार॥शें०॥श्री शुलवीर कहे सुणो, आगल वात रसाल॥ शें०॥९॥

॥ढाल नवमी॥शोगठां मांड्यां शो लेरे॥ए देशी॥

॥ गिरि आसन ऊग्यो पतंग रे, जिन वरशुं जग्यो रंग रे॥ तूठा जिनवरा रे॥ति हां शिलावटने तेडावे रे, घणी धननी जा- ण जणावे रे॥तू०॥१॥साजन सकुन ते- डावे रे, गोडीगाम ते शेठ वसावे रे॥तू०॥- अनुक्रमें केता दिन जातां रे, मेघो हूओ- जगत विख्याता रे॥तू०॥२॥ते सांभलीका-

जल आवी रे, अेक मेघाने वात सुणावी
रे ॥तू०॥ जिन चैत्य करो ईहां सारो रे, मां
हें अर्ध्यो लाग अमारो रे ॥तू०॥३॥ नज
कानलशा अेम कहे छे रे, तव मेघो उत्तर
अेम दे छे रे ॥तू०॥ सुण कानल तुं अेक-
चित्त रे, जेहछे केणुं तुज वित्त रे ॥तू०॥४॥
जिनराज तणो सुपसाय रे, घणुं धन मल्युं
मुज आंहीं रे ॥तू०॥ प्रतिमा लाव्यो कुंजम
रे, मांग्या पांचसें पाछा दाम रे ॥तू०॥५॥ अे
पथ्थर छे कुण काज रे, अेम कहतां नावी तुज
लाज रे ॥तू०॥ पछ्यो कोपें ते कामल कालो
रे, घरें आव्यो अति विकरालो रे ॥तू०॥६॥
मारिं मेघाने कुंजारें रे, शांति वलशे मु
ज त्यारें रे ॥तू०॥ अेह चिंताये अन्न न भा
वे रे, रौद्र ध्यानें निंद न आवे रे ॥तू०॥७॥

તાડે છલ હણવાને કામ રે, તિસ્યો નામ તિસ્યો પરિણામ રે ॥ તૃ૦ ॥ તિવિ દુર્જન સંગત કીજે રે, કહે વીરવિજય સુજ઼ઘીજે રે ॥ તૃ૦ ॥

॥ ઢાલ દશમી ॥ રાયજી અમે તો હિંદુઆણીકે, રાજ ગરાશીયા રે લોલ ॥ એ દેશી ॥

॥ પરણાવુ સુતા કું માહારી કે, ગુણવંતી સઘરે લોલ ॥ વિવાહ ઓચ્છવ મંડાવું કે, એમ ચિંતે તદા રે લોલ ॥ ૧ ॥ વલી ન્યાતી જમાડું મહારી કે, ચૈત્ય કરે વહી રે લોલ ॥ મેઘાને તેડું ભલી ભાંતિ કે, વિષ દેઉં સહી રે લોલ ॥ ૨ ॥ વિવાહ ઓચ્છવ મંડાવ્યો કે, તે શેઠે હવે રે લોલ ॥ સાજન સહુ ન્યાતી રસાલ કે, તેડે તે હવે રે લોલ ॥ ૩ ॥ મેઘા શાને મોકલે જકુમાને કે, નોતરે તે સહી રે લોલ ॥ વિ

વાદ કારણ છે મહોટો કે, આવજ્યો તુમેં અ
હીં રે લોલ ॥૪॥ મેઘાશાને સમીપેં આવી
કે, તે વીનવે ઘણું રે લોલ ॥ તવ મેઘો કહે
કામ મહોટું કે, દેહરાસર તણું રે લોલ ॥૫॥
કહો કેમ આવાયે અમથી, તે જાણો તમો
રે લોલ ॥ મુજ તેડી જશો પરિવાર કે, નવી
આવીયેં અમો રે લોલ ॥૬॥ મરગાદેવી આ
દેં પરિવાર કે, લઈ કરી તિહાં રે લોલ ॥ નૂ
દેસર નગરેં આવ્યા કે, કાજલ છે તિહાં રે
લોલ ॥૭॥ તવ કાજલ પૂછે કેમ લાવ્યા કે,
શ્યું કારણ અહીં રે લોલ ॥ તો મેઘા વિણ
કિમ થાવે કે, ન્યાતિ જિમે પછેં રે લોલ ॥
॥૮॥ એમ કહે છે કાજલ શેઠ કે, ચિંતાતુર થ
યો રે લોલ ॥ આગલ વાત સુશોભિત થાય,
તે વીરવિજય જયો રે લોલ ॥૯॥

॥ दोहा ॥ एणीपरें कनक नूरतो, चिंते चित्त मझार ॥ कूड कपट केली करी, तेडी लावुं घर जार ॥१॥ इम चिंतवतो चालीयो, कनकशा तेणी वार ॥ छंडे प्रयाणें आवीयो, तेह नयरने जार ॥२॥ गोडीपुरमां किम हूओ, मेघाशा गुणवंत ॥ वीर कहे तस सांभलो, आगल कहुं वृत्तंत ॥३॥

॥ढाल अगीआरमी ॥ वाहाला तुमारी वाडीयुं विणशी जायरे वाहाला ए देशी ॥

॥ एक दिन सूता शेठजी शय्या मांहें रे, संताजी, एणी परें जोने व्यंतर आवी उत्साहें रे हो संताजी ॥ कूड कपटनुं मंदिर कनक कालो रे संताजी, तेडवा आवशे तुजने ताहरो शालो रे हो संताजी ॥१॥ घणुं क

હે પણ તું નથી અને તેહને ઘેર રે સંતાજી, તુ
નને હણશે અનલશા દેઈ ઝેર રે હો સંતા-
જી॥ઘણું કહ્યાથી જો તું જઈશ સાથે રે સં
તાજી, તો જિનવર નમણ કરીને તેને હા
થે રે હો સંતાજી॥૨॥ગોપય માંહે દેશે કા
નન જેહ રે સંતાજી, નમણ પીધાથી વ
લશે પાછું તેહ રે હો સંતાજી॥ હિત કારણ
એ સુણને વયણ રસાલ રે સંતાજી, એમ
કહી ચાલ્યો વ્યંતર તે તત્કાલ રે હો સંતા-
જી॥૩॥ દિનકર ઉગ્યો તિમિરનો હૂઓ-
નાશ રે સંતાજી, કાનલ આવ્યો મેઘાશા
ની પાશ રે હો સંતાજી॥ ઈણી પેરે જોલે ઠ
ક્ક વચન રસાલ રે સંતાજી, જિમ જનની-
ની આગલ જોલે બાલ રે હો સંતાજી॥૪॥
માન્યું એશે વચન અમારું પેલ રે સંતાજી,

आवो सघळो मूकी मननो मेलरे हो सं-
ताजी ॥ तुम सरिखा जे सज्जन मुज केहेवा
यरे संताजी, ते नावे तो विचार करो किम-
थायरे हो संताजी ॥ ५ ॥ हस्ती विना सहु
सेना सोहे यथा रे संताजी, तुम विण वि
वाह ओछव ते दीपे तथा रे हो संताजी ॥
जोडी पुरमां आव्यो हुं हरखे करी रे संताजी,
तुम आव्या विण किम जाउं पाछो फरी
हो संताजी ॥ ६ ॥ नहीं आवो तो पडशे तुम
अम भंग रे संताजी, ते कारण भलु आवी
राखो रंग रे हो संताजी ॥ हठ करीने शुं बेठा
छो महाराज रे संताजी, खोटी करो छो अ-
मने तमे शा काज रे हो संताजी ॥ ७ ॥ खाट-
लो हठ न जोईये कहुं छुं थई रांक रे संता-
जी, ओल्यो हसो ते सघलो म्हारो वांक रे

हो संताजी ॥ ईणी परें आनलशा ते जोती रह्यो हवे रे संताजी, तव मेघाशा मनमां एम चिंतवे रे हो संताजी ॥८॥ नमतो महोटो पादप ते कहेवाय रे संताजी, अति ताण्यु तो रज्जु पण त्रूटी जाय रे हो संताजी ॥ हवे जवाने थाये ते उजमाल रे संताजी, आनल साथें थाव्या ते तत्काल रे हो संताजी ॥९॥ ईण अवसर नमण लेवु विसर्युं विश्वावीश रे संताजी, आव्या ते मन उल्लासें जू देशा रे हो संताजी ॥ वीर कहे सुणजो तमो हितकार रे संताजी, लावी आगस कोईनो न वी थाशे निरधार रे हो संताजी ॥१०॥

॥ढाल बारमी॥ अरे लोजन लाली ध्यारें करीशुं ॥ ए देशी ॥

॥ वर कन्या परणावी शेठें, जरथे वित्त

ते जोहोसुं रे ॥न्याति विभाडवा कारण का
नल,करतो काम ऊतावलुं रे ॥१॥हवे कन
लशा निज नारीने, शीखवे ते एक चित्तशुं
रे ॥ मेघाशाने अमें होय लेगां, जेशीशुं ओ
कु रीतशुं रे ॥२॥ दूध मांहे विष लेलवी देज्यो,
थाल मांहे तेणे समे रे ॥ दूध तणी कुं जां
जडी रीशें, भेलन्ने भेघाने तमे रे ॥३॥नारी
कहे पीयु वात निवारो, मेघाने हणवा तणी
रे ॥ कुल मांहे सकु लंछन देशे, कारण नहीं क
हो हणी रे ॥४॥ पुण्य थकी ने एणें ऋद्धि
पामी, जग जश कीर्त्ति घणी लही रे ॥ कर्म व
शें सहु जनने जाणो, एमां कांई चाले नहीं
रे ॥५॥ ईणी परें बोल कह्या वनितायें, का
जल तो ऊल्लास नहीं रे ॥ मीतकी तो परा
णे नवी होवे, मन मोती लागुं सही रे ॥६॥

हवे जेम शीजवी निज नारीने, जमवाने जे
ठु बेसीया अे ।। दूध आणीने तिण नारी-
यें, थाल मांहे जई पीरसीया अे ।।७।। आं
खडी कानजशा जग कहे छे, नारी जोने ति
हां थायुं रे ।। नारी कहे जणहोई न जाशो,
दूध मांहे विष लेखवुं रे ।।८।। मेघो कहे ली-
धो नवी छांडु, थाली मांहे ले आपीयुं रे ।।
ईम जाणीने पीधुं ते शेठे, साते अंगे व्या
पीयुं रे ।।९।। काल करी परलोके पोहोतो,-
सोक भय्यो तिहां सहु लखो रे ।। शुभ चि
त्तें शुभ गतिने पाम्यो, वीर कहे लवी सां
लखो रे ।।१०।।

।।ढाल तेरमी।। सांजरमतीयें आव्यां
छे जल पूरजे ।। अे देशी ।।

।। हवे निजनारी छे सुजडारी नेहजे,

तेहनेरे आगल वात कही यघारे॥ नेत्रा के
वा कारण आवी पीयुने धाम जो, नयण-
आंसु पूरेरे मूर्च्छागत तघा रे॥५॥जकु णि
पचारें चित्त वल्युं तव तेहजो, अेणी पेरें जो
ते सा प्रेमघ वली रे॥ कि ट कुलहीणा शुं क
र्युं तें काम जो, अेहवी रे बुधि किहां तुजने
भली रे॥६॥तुज लगिनीनुं कुण होशे सखू
क जो, ते माहरे रे कर्म जे छान्युं नहीं रे॥ जे
हमां वीरा हीन कुणने दोष जो, छहीने दिव
े विधियें लख्युं सही रे॥७॥ दिनकर णी
.. कर करे विस्तार जो, नवी दूजे दिवसें रे णि
.. क कह्यो जशे रे॥ नवी पडे चातक वहने
नीरनो बिंदु जो, जे सघलो दाव तेकर्म त
णो जशे रे॥८॥ परदेशें गयो आवे केई
क वार जो, ईणी वाटें चाल्यो रे ते नावे कदा

रोपण मुज नंदन ह्वाना मेल्यां जाल जो,
केहने रे तात कही रमशो सघरे ॥५॥ कुंवर
तीती आश घणी मनमांहें जो, गोडीपुर
गामें रे चैत्य नवो जनेरे ॥ ते सघलो रह्यो
आल थकी निरधार जो, आशा मुज तोडी
रे शुं कहीयें तनेरे ॥६॥ महीओने मेरो ते
पण आव्या त्यांय जो, नयणें नीरधारा रे
रुदन करें करेरे ॥ एणी परें बोले धिग्
धिग् मुज अवतार जो, जनपदमां तुं वद
न देखाडीश केणी परें रे ॥७॥ विरोध्य वा
त करे पुरमां नरनारी जो, द्वेष राजीने मे-
घाने मार्यो अहीं रे ॥ कालतशा छे कूड क
पटनी खाण जो, मननो मेलो धीठो ओह
वो कोई नहीं रे ॥८॥ द्वेष करे ते दुर्गतिनां
दुःख पामे जो, एणी परें कालतने सहु हिंड हि

टकरे दुःख आणजे रे ॥ दुर्जन केतें कही तेर
मी ढाल जे. विजयांकित शुभवीर कहे लचि
जणजे रे ॥८॥ ॥ इति ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ जंघ टुंका छे पण जे
वडा रे, रिट हैयाना रे ॥ ए देशी ॥

॥ अग्निनो दाह देई करी रे, निज ठामें
आव्या सकु करी रे ॥ निज जनने कलस वि
नवे रे, शा कारण रुदन करो हवे रे ॥१॥ ल
क्ष्यें प्रभु गोडी हो के अमृत पद दाता, तक्ष
ये दुःख दोहग होके पुण्यें सुख शाता ॥ ए
आंकणी ॥ मूरख जो जन्म मरण हाथें नही रे,
सुख दुःख सरज्यां पामे सही रे ॥ जे जेह
यें ते आपु करी रे, मनथी चिंता काढो परी
रे ॥ल०॥त०॥२॥ जिननो प्रासाद करावशुं
रे, मही पीठें नाम ते राखशुं रे ॥ गाम गोडी

छे सोढातणुं रे, थालो लईयें लई घर आप
णुं रे ॥ज०॥ त०॥३॥ अनुक्रमें डालल आ
वीया रे, साजन सहु साथें लावीया रे॥
श्रीजिन प्रासाद करावीयो रे, गोडी पारस
प्रभु पधरावीयो रे॥ज०॥ त०॥४॥ हवे-
देहरे शिखर चढावीयो रे, थिर न रहे हेठुं
आवीयुं रे॥ वली बीजी वार चढावीयुं रे,
थिर न रहे हेठुं आवीयुं रे॥ज०॥ त०॥५॥
वली त्रीजी वार चढावीयुं रे, थिर न रहे
हेठुं आवीयुं रे॥ डाललशा मनमां चिंत
वे रे, विचार ते कुण करवो हवे रे॥ज०॥ त०
॥६॥ यक्ष सुहणा मांहें आवतो रे, शेठ मे
हराशाने जणावतो रे॥ तुज जनक ते मा-
र्यो एहने रे, जस केम हुं आपुं तेहने रे॥
ज०॥ त०॥७॥ तुमना चित्तमां लावजे रे, ज

ठे देहरे शिखर चढावने रे॥हवे मेहरे शि
खर चढावीयुं रे. जगमांहे नाम जगावीयुं
रे॥भ०॥त०॥८॥संवत चउद पुमाले-
(१४४४) लावतां रे, शुभ मुहूर्त्त प्रतिष्ठा क
रावता रे॥ महीयोने मेरो मेघा तणा रे, ज
तेणे जगमां जस लीधा घणा रे॥भ०॥त०॥
॥७॥तेणे दिन थलमां वसीया रे. भविकहो
शिवसुख रसीया रे॥ मेघो मार्यो तेहने
कारणे रे, जिनवरजी रहेशे जाकारणे रे॥भ०
॥त०॥१०॥गोडीपुरनो शोढो नरेसरू रे.ते
णे स्वप्नमां कहे यक्षेशरू रे॥पूरनारो छुं तु
ज आशानो रे, घेर लावजे प्रतिमा पासनी
रे॥भ०॥त०॥११॥भवि भूडी मननो आ
मलो रे, हवे पूरव भव तस सांभलो रे॥-
जेह वृध्ध वचन अनुसारथी रे, कही थो

दमी ढाल ऊघरथी रे॥जि०॥जि०॥१२॥ ५॥

॥ढाल पंदरमी॥नावण करीये केड॥

केड राजवीरे जी॥ए देशी॥

॥पार कर नामा देश देशमांहे वडो-

जी॥हांरे तिहां सुर्थपुर नामा गाम जी॥

वरणु अढारे शोभित पुर सोहामणुं जी॥

अे आंकणी॥क्षत्री वंश विलक्षण राजरा

जतो जी॥हांरे कोई जकु गुणवंतो शोढो

नाम जी॥वरण०॥१॥ते नयरमां अेक व

से व्यवहारीयो जी, हांरे तेनु गोडीशा अ

भिधान जी॥व०॥गुणनो गिरवोने लोगे

प्यारो लोकने जी, हांरे वली राजनुं छे जकु

मान जी॥व०॥२॥जग संहारण दुःजनो अ

रण जेहवो जी, हांरे द्वादश वरशी पड्यो दु

काल जी॥व०॥सुर्थपुरनां भेवाशी चाल्या

मालवे जो,॥ ए टेक॥ नृपति वाणीयो दोज
ण पण चालीया जो, हांरे सुर्ढपुर उजड
थयुं तत्काल जो॥सुर्ढपुरनां०॥३॥ अनुक्र
में मालवदेशें आवीया जो, हांरे उजयणी
नयरी मोझार जो॥सु०॥ निज निज पुण्य-
जलें ते काल गमावतां जो, हांरे सुखमां अ
ढ्यां वर्ष जार जो॥सु०॥४॥ मेघाशायें न-
यर वसाव्युं सांभली जो, हांरे ते मन मांहें
चिंते दोय जो॥सु०॥ हवे निज नयरें जईयें
के राज सुणो जो, हांरे भाई तो सुखशाता
होय जो॥सु०॥५॥ तुरंगारोहण महीपति
वणिक उभय जणा जो, हांरे हवे मारग चा
ल्या जाम जो॥सु०॥ जतें कश्चित् कोली ते
साथें थयो जो, हांरे छे ते तसुर शीहो ना
म जो॥सु०॥६॥ ते कुल मच्छ तणी परें शी

हो चिंतवे मनमांहे गोडीशा ऊपर एम ज्ने॥ सुं०॥ वणिक कमाडे धन जानु लहे जयछ ज्ने, हांरे ते मुज पासे आवे केम ज्ने॥सुं०॥४ ॥कोईक अवसर पामुं तो हुं एहने ज्ने, हां रे करुं जिवितनो अपहार ज्ने॥सुं०॥ [illegible] पीठे वहने भीठे जोवतो ज्ने, हांरे [illegible] थर परें निरधार ज्ने॥सुं०॥५॥ [illegible] रतां ते पारकर मांहे [illegible] पुर गाम तणें आराम ज्ने॥सुं०॥[illegible] आ वी जेठ छे ज्यां [illegible] ज्ने, हांरे हवेशुं जन्युं एणें ठाम ज्ने॥सुं०॥७॥

॥ढाल शोलमी॥ आवो आवो यशो धना कान, गोठडी करीयें रे॥ए देशी॥

॥ घोडा जांघी वड ते थाल्यो, शोढो- जस लखवा रे॥ एक वाट्य छे महोटी सांढ,

મુજ શોધન કરવા રે ॥૧॥ શેઠ ગોડીશા લેઈ
ઘરાણ, મુજ પ્રક્ષાલે રે ॥ પાણી લાગ તે કો
ની, સોઢો હણે કરવાલે રે ॥૨॥ પાડી રાડિ
ને સાંભળી સોઢો, કરે વિચાર રે ॥ કહો કુણે રે
જન્યું એણે કામ, થાઉં અસવાર રે ॥૩॥ એમ
ચિંતવતો તિહાં આવ્યો, થઈ હુશીઆર રે ॥
શેઠ ગોડીશા તત્કાલ, દુઃખ અપાર રે ॥૪॥
જીવ કેમે કર્યા નવિ જાય કે, શેઠનો ત્યાંહિ રે
॥ હજી તરફડતો તે સોઢો, ચિંતે ચિત્તમાં
હિં રે ॥૫॥ ધન લાલચી ગોડી માર્યો, એણે
પાપ કીધું રે ॥ રાજા પૂછે સોઢાને તામ, ઉત્ત
ર નવિ દીધું રે ॥૬॥ જાણી ચોર હણ્યો તે કો
ળી, રાજાયેં જામ રે ॥ હજી ચિંતે લીધું જલેં
વેર, રૂડું એ કામ રે ॥૭॥ શુભ ધ્યાનેં મરી તે
શેઠ, હુવો તતખેવ રે ॥ ગોડી પાસ પ્રભુનો-

दास के, व्यंतर देव रे ॥८॥ शोधो थाली आ
व्यो पुर मांहे, लीधा राज काज रे ॥ पूरवल
वनी प्रीते, संभलावे यक्षराज रे ॥९॥ प्रति
मा राज भर्णी लावे के, निज घर लावे रे ॥
तव देशना सांभली थोक ते, दरिशने आवे
रे ॥१०॥ केई भाजता भावे लाजनी, आत
म लावे रे ॥ काम थाय सवि दुःख जाय ते,
संपत्ति पावे रे ॥११॥ टाले विघ्न निवारे रोग
ने, समरे जाप रे ॥ मनवांछित पूरे काम के,
टाले संताप रे ॥१२॥ निर्धनीयाने धन दा
यक, नायक स्वामी रे ॥ निराधारनो छे आ
धार, नमो शिर नामी रे ॥१३॥ महानंद त
णुं छे कारण, ध्यान उत्तंग रे ॥ मति ही
णाने बुध्धि प्रकाश के, आरती भंग रे ॥
॥१४॥ अपुत्रीयाने पुत्रनो दाय, गोडी न

सराने रे ॥ उरे अयरने वली सूर के, हरिम
लांने रे ॥१५॥ वृध्ध वचनने अनुसार के,
वात अे भणी रे ॥ कहे वीर सुणो भवि प्रा
णी के, स्तवनमां आणी रे ॥१६॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ वाला तमे ते डना
हाणी ज ॥ अे देशी ॥

॥ प्रभु पास गोडी मुज तूठा जे, अ
मीयें मेह वूठा जे ॥ प्रभु चरण युगल मु
ज मलियां जे, संकट सरवे टलीयां जे ॥
॥१॥ मह सात भयादिक नाठा जे, आ
ज थकी ते नाठा जे ॥ मुज आगणे सुरत
रु फलीयो जे, सुरमणि सम प्रभु मली-
यो जे ॥२॥ प्रभु दरिसण अमृत जावो-
जे, आपो अविचल दावो जे ॥ मेंतो गाया
प्राण आधारा जे, जिनवरजी नयडारा जे

॥७॥ कलियुगमां सुरतरु सरीखो रे, प्रभु-पार्श्वगोडीमें निरख्यो रे ॥ प्रभु समता वेल वधारो रे, भवजल पार उतारो रे ॥ ॥८॥ महावीरने पाटें सोहाया रे, गणधर केई कहाया रे ॥ विजयदानसूरि गच्छराया रे, प्रणमुं तेहना पाया रे ॥९॥ तस पाटें दिनकर सरिखा रे, हीरविजय गुरु परिख्या रे ॥ जेणें निज आतमने शोध्या रे, अकबरशा प्रतिबोध्या रे ॥६॥ विजयसेन सूरि पद थापी रे, सवाई गुरु पदवी आपी रे ॥ तस पाटें महोदयवंता रे, विजयदेवसूरि विचरंता रे ॥७॥ विजयसिंहसूरि गणधारी रे, जगमां कीर्त्ति सारी रे ॥ तस शिष्य वडेरो दास रे, सत्यविजय पन्यास रे ॥८॥ तस कपूर विज

य शिष्यो रे, जिमाविनय मुनीशो रे।। रा विनय गुणे गंभीरो रे, शुभविन य श्रुत तीरो रे ।।८।। तस चरण तणे सु पसाय रे, त्रंबावती पुर थाय रे ।। गर्र- जानी देशीमांहे रे, स्तवन रचीयुं उ त्साहे रे ।।१०।। पावक मार्गण करी चंदो रे, संवत शोल सुजकंदो रे ।। वली मा सयुं नेठ उधार रे, सीत पंचमी शशी वार रे ।।११।। जे भणे सुणे भवि भावे रे, ते सुज संपत्ति पावे रे ।। कहे वीरवि नय सुविशाला रे, तस घर मंगलिक मा ला रे ।।१२।।

।। कलश ।। इम विश्वनायक सकल सायक. मुक्ति दायक, जिनवरो ।। मिथ्या- त्वगंजन. दुरित भंजन, गोडी पार्श्व जिनेश्व

રોગ આધ્યો સવાલત વર્ષ પંચમી, દ્વિતી-
યપર્ણે વડવરી ।। તસ કરુણથી એ સ્તવ
ન રચીઓ, વીરવિજય સુખકરી ।।૬।। ।।

।। ઇતિ શ્રી ગોડી પાર્શ્વનાથજીનું ગુજ
રાતી દેશીઓમાં ગવાતી ઢાલોમાં રચે
લું સ્તવન સંપૂર્ણ ।।

।। અથ જીવ સ્વરૂપ ઓલખ સ્વાધ્યાય ।।

।। સુણ જેહની પીયુડો પરદેશી. એ દેશી ।।

કે કાલ ચલેશી રે ।। કહો કુણ માહારી સાર
કરેશી, છિન છિન વિરહો દેશી રે ।। સુ।।૧।।
પ્રેમ વિલુધ્ધોને મદ માતો. કાલ ન જાણ્યો
જાતો રે ।। અનુચિત્ત આણો આયો તાતો, રહી
ન શક્યો રસ રાતો રે ।। સુ।।૨।। વાટ વિષમ
કોઈ સંગ ન આવે, પીયુડો એકલો જાવે રે ।।

विण स्वारथ कहो कोण पोहोंचावे. आप कीयां
फल पावे रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ लखमसी पुर पुरमां जइ
जेकलो, जपुं गलिया मांहे घहेलो रे ॥ जवि
जाणुं कित जइ रहेलो. विछर्यो मिलणो दो
हिलो रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पोते संजम साथ न ली-
धो, दूजे किणही न दीधो रे ॥ मूल गमाय वि
ल्यो अविसिध्यो, अे कोई काम न कीधो रे ॥
सु० ॥ ५ ॥ प्रीतम विण हुं जइ रे विरहिणी. कि
णही मन न सुहाणी रे ॥ पीयर कामें प्रीत पी
छाणी, जज लग छाहारी कहाणी रे ॥ सु० ॥ ६ ॥
वयरागी अंतर वैरागी, प्रीत सुणत जवी
जगी रे ॥ राजसमुद्र कहे वडभागी, नारी-
विण सोभागी रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥

॥ समाप्त ॥

समाप्त.